निदेशकों की रिपोर्ट

प्रबंधन विवेचन और विश्लेषण

आर्थिक पृष्ठभूमि और बैंकिंग परिवेश

भारत की अर्थव्यवस्था फिर से पटरी पर लौटने लगी है। वर्ष 2009-10 के लिए इसकी वृद्धि दर 7.2% रहने की संभावना है जो बीते वर्ष की 6.7% से अधिक है। उद्योग क्षेत्र में अच्छा सुधार होने और सेवा क्षेत्र के लगातार तेजी से बढ़ने के कारण वृद्धि-दर बीते वर्ष की तुलना में अधिक रहने की संभावना है। कृषि क्षेत्र में, रबी की अच्छी फसल होने के कारण कृषि पैदावार में गिरावट के थमने और इसके -0.2% के आसपास रहने की उम्मीद है जबकि वर्ष 2008-09 में इसमें 1.6% की वृद्धि हुई थी। गिरावट के थमने से वर्ष 1972 के बाद से अब तक के सबसे खराब दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण खरीफ की फसल को हुई हानि की कुछ हद तक भरपाई हो पाई।

उद्योग क्षेत्र में खासा सुधार दिखाई दिया। वर्ष 2009-10 में इसके 8.8% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। वर्ष 2008-09 में इसकी वृद्धि दर 3.1% रही थी। वर्ष 2009-10 में निर्माण क्षेत्र में गत वर्ष की 3.2% वृद्धि की तुलना में 8.9% की अच्छी वृद्धि हुई। यह वृद्धि पूंजीगत वस्तुओं, उपभोक्ता वस्तुओं और मध्यवर्ती वस्तुओं में हुई जबरदस्त वृद्धि के कारण हुई। निर्माण क्षेत्र के अलावा खनन और विद्युत क्षेत्र का भी पहले की तुलना में हुई अधिक औद्योगिक वृद्धि में योगदान रहा। खनन क्षेत्र में वर्ष 2009-10 में 8.7% की वृद्धि होने का अनुमान है जबकि गत वर्ष 1.6% की वृद्धि हुई थी। विद्युत क्षेत्र में गत वर्ष की 3.9% वृद्धि की तुलना में 8.2% की वृद्धि होने की संभावना है। सेवा क्षेत्र का जीडीपी में लगभग दो-तिहाई हिस्सा रहता है। वर्ष 2009-10 में इसके 8.5% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। वर्ष 2008-09 में इसकी वृद्धि दर 9.3% रही थी। सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर में नरमी मुख्यतया सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाओं के कारण रही। सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर वर्ष 2009-10 में 8.2% रही जबकि वर्ष 2008-09 में यह 13.9% रही थी।

विकसित देशों में आर्थिक सुधार के संकेतों के चलते नवंबर 2009 में व्यापारिक निर्यात सकारात्मकता की स्थिति में आ गए जिनमें तेरह महीने से लगातार गिरावट की स्थिति बनी हुई थी। फिर भी वर्ष 2009-10 के दौरान कुल मिलाकर निर्यातों में नकारात्मकता की स्थिति बनी रही और इनमें 4.7% की गिरावट आई जबकि आयातों में गत वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 8.2% की गिरावट रही। देश और विश्व की अर्थव्यवस्था में सुधार होने का पूँजी की शुद्ध आवक के आंकड़ों से पता चलता है। खासतौर पर विदेशी संस्थागत निवेशकों से वर्ष 2009-10 में 29 बिलियन अमरीकी डॉलर की अच्छी खासी पूँजी प्राप्त हुई जबकि वर्ष 2008-09 में 15 बिलियन अमरीकी डॉलर की शुद्ध पूँजी बाहर गई थी। नवंबर 2009 में भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार का बंदोबस्त करने में आईएमएफ से 200 मीट्रिक टन सोना खरीदा किंतु देश के विदेशी मुद्रा भंडार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ क्योंकि सोना तो केवल विदेशी मुद्रा संपत्ति के एवज में खरीदा गया था। पूंजी की अच्छी आवक के कारण देश का विदेशी मुद्रा भंडार (सोने और एसडीआर को मिलाकर) 27.1 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़कर 279.1 बिलियन अमरीकी डॉलर पर पहुँच गया। रुपये में भी अमरीकी डॉलर के मुकाबले वृद्धि हुई और यह मार्च 2009 के अंत के रु. 50.95 प्रति डॉलर के स्तर से मार्च 2010 के अंत में रु. 45.14 प्रति डॉलर पर आ गया।

वर्ष 2009-10 की पहली दो तिमाहियों में नरम बने रहने के बाद मुद्रास्फीति तीसरी और चौथी तिमाहियों के दौरान चिंता का सबब बनी रही। थोक मूल्य सूचकांक के मामले में मुद्रास्फीति में मार्च 2010 में वर्ष-दर-वर्ष 9.9% वृद्धि हुई जबकि मार्च 2009 में यह वर्ष-दर-वर्ष 1.2% के स्तर पर रही थी। मुद्रास्फीति में यह वृद्धि मुख्यतया खाद्य पदार्थों की आपूर्ति प्रभावित होने के कारण हुई। इसी अवधि के दौरान खाद्य पदार्थों की कीमतों में 17.70% की खासी वृद्धि हुई जबकि एक वर्ष पहले इसी अवधि में 6.97% की वृद्धि हुई थी।

वैश्विक वित्तीय संकट के पश्चात नकदी की विकट स्थिति उत्पन्न हो गई थी, जिसके कारण भारतीय रिज़र्व बैंक को उसके अनुरूप मौद्रिक नीति अपनानी पड़ी जो वर्ष 2009-10 के दौरान अधिकांशत: जारी रही। चूंकि विश्व की वित्तीय और आर्थिक स्थिति और बिगड़ गई थी, इसलिए अर्थव्यवस्था में नकदी और वृद्धि दर बढ़ाने के लिए सितंबर 2008 के पश्चात अनेक उपाय किए गए थे। अप्रैल 2009 में रिवर्स रेपो दर और रेपो दर में 25 आधार अंकों की कमी करके क्रमश: 3.25% और 4.75% के स्तर पर लाकर वर्ष 2009-10 में नीतिगत दरें और नरम बनाई गई। नकदी की अच्छी स्थिति को देखते हुए एसएलआर को नवंबर 2009 से एनडीटीएल के इसके पूर्ववर्ती स्तर 25% पर पुन: लाया गया। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा वर्ष 2009-10 की अधिकांश अवधि में लचीली नीति अपनाए जाने के कारण जमा और ऋण दोनों की ब्याज दरें नरम बनी रही। बड़े बैंकों की पीएलआर मार्च 2009 के अंत के स्तर 11.50-12.50% से 50 आधार अंक गिरकर मार्च 2010 के अंत में 11.0-12.0% पर आ गईं। इसी अवधि में जमा दरें 7.75%-8.75% से गिरकर 6.0-7.50% के स्तर पर आ गईं। हालांकि मुद्रास्फीति बढ़ने की चिंताओं के बीच जनवरी 2010 में कुल मिलाकर

Directors' Report

Management Discussion and Analysis

Economic Backdrop and Banking Environment

The Indian economy is back on track and poised to grow by 7.2% in 2009-10, higher than 6.7% in the previous year. The strong industrial recovery and continuing momentum in services sector is the key underlying strength behind the higher growth. On the agriculture front, decline in farm output is expected to be contained at around -0.2%, against growth of 1.6% in 2008-09, due to good rabi harvest, partially offsetting the kharif losses suffered because of the worst South-West Monsoon since 1972.

Industry showed a marked improvement and is expected to grow by 8.8% in 2009-10 against 3.1% in 2008-09. The higher growth of 8.9% in 2009-10 in manufacturing, against 3.2% in the previous year, was propelled by robust performance of capital goods, consumer durables and intermediate goods. Apart from manufacturing, mining and electricity also contributed to higher industrial growth. Mining is projected to grow by 8.7% in 2009-10 against 1.6% in the previous year while electricity is likely to grow by 8.2% against 3.9% in the previous year. Services sector accounting for about two-third of GDP, is expected to grow by 8.5% in 2009-10, against 9.3% in 2008-09. The moderation in services sector growth was largely on account of community, social and personal services, which grew by 8.2% in 2009-10 against 13.9% in 2008-09.

Following signs of economic revival in developed countries, merchandise exports moved into positive territory in November 2009 after declining continuously for thirteen months. However, cumulative exports during 2009-10 remained negative and declined by 4.7%, while imports declined by 8.2%. Revival in the domestic and global economy was reflected in net capital inflows. In particular, net FII inflows were a robust US $29 bn in 2009-10 as against net outflow of US $15 bn in 2008-09. In November 2009, RBI purchased 200 metric tons of gold from the IMF as a part of its foreign exchange reserves management operations but the forex reserves of the country remained unchanged since the gold purchase was only a substitution of foreign currency assets. Due to strong capital inflows, forex reserves of the country (including gold and SDRs) increased by US $27.1 billion to US $279.1 billion and the Rupee appreciated against the US dollar from Rs.50.95 per dollar at end-March 2009 to Rs.45.14 per dollar at end-March 2010.

After remaining benign in the first two quarters, inflation emerged as a major concern during the third and fourth quarters of 2009-10. Increase in WPI inflation to 9.9% YoY in March 2010 from 1.2% YoY in March 2009 was largely driven by supply side factors particularly in the case of food items. In the same period, food prices increased sharply by 17.70% compared to the rise of 6.97% a year ago.

The liquidity constraint that emerged following the global financial crisis led RBI to follow an accommodative monetary policy stance which was continued during the major part of 2009-10. As the global financial and economic conditions deteriorated, a series of measures were taken after September 2008 to enhance liquidity in the system and support growth in the economy. There was further easing of policy rates in 2009-10 as the Reverse Repo rate and Repo rate were slashed by 25 bps each to 3.25% and 4.75% respectively in April 2009. Keeping in view the comfortable liquidity position, the SLR was restored to its earlier level of 25% of NDTL from November 2009. Due to the accommodative policy followed by RBI during major part of 2009-10, interest rates on both deposits and credit softened. While PLR of major banks fell by 50 bps from 11.50-12.50% at end-March 2009 to 11.0-12.0% at end-March 2010, deposits rates declined from 7.75-8.75% to 6.0-7.50% in the same period. Even as there were signs of a recovery in January 2010, amidst concerns about rising inflation, RBI announced a hike in CRR by 75 bps to 5.75% in two tranches to keep a check on liquidity and

स्थिति में सुधार होने के संकेत मिलने को देखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक ने नकदी पर अंकुश लगाने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए सीआरआर में दो चरणों में 75 आधार अंकों की वृद्धि करके इसे 5.75% के स्तर पर लाने की घोषणा की। मुद्रस्फीति बढ़ने की उम्मीदों को कम करने के लिए दिनांक 19 मार्च 2010 को भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा रेपो और रिवर्स रेपो दरों में 25 आधार अंकों की वृद्धि करके उन्हें क्रमश: 5% और 3.50% के स्तर पर लाया गया।

वर्ष 2009 की तीसरी और चौथी तिमाहियों में विश्व अर्थव्यवस्था में हुए सुधार से आईएमएफ को वर्ष 2009 में आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट के अनुमान को 1.1% से घटाकर 0.8% करना पड़ा। आईएमएफ द्वारा वर्ष 2010 के लिए वैश्विक वृद्धि दर के अनुमान को भी संशोधित कर 4.2% से घटाकर 3.9% करना पड़ा। वर्ष 2009-10 में विकसित देश वैश्विक वित्तीय संकट के बाद अपनी अपनी अर्थव्यवस्थाओं को स्थिर करने पर ध्यान केंद्रित करने लगे जबकि भारत सहित उभरते बाजार वाले देश अपनी अपनी अर्थव्यवस्थाओं पर वैश्विक वित्तीय संकट के बुरे असर को कम करने में लग गए थे। वर्ष की दूसरी छमाही में भारत में अर्थव्यवस्था के पटरी पर आने को देखते हुए नीतिगत उपायों के अंतर्गत संकट से उबरने के स्थान पर सुधारों को संतुलित करने पर जोर दिया गया।

वर्ष 2010-11 के दौरान विकसित देश वित्तीय स्थिति में और सुधार लाने तथा वृद्धि दर बढ़ाने का प्रयास करेंगे जबकि भारत सहित उभरते बाजार वाले देशों का प्रयास रहेगा कि वे कीमतों में स्थिरता लाने के साथ समझौता किए बिना सुधार की प्रक्रिया को जारी रखेंगे।

वित्तीय निष्पादन

लाभ

वर्ष 2008-09 के रु. 17,915.23 करोड़ की तुलना में वर्ष 2009-10 के दौरान बैंक का परिचालन लाभ रु. 18,320.91 करोड़ रहा और इस प्रकार इसमें 2.26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2009-10 के दौरान बैंक का निवल लाभ 0.49 प्रतिशत की दर से बढ़कर वर्ष 2008-09 के रु. 9,121.23 करोड़ की तुलना में रु. 9,166.05 करोड़ हो गया।

निवल ब्याज आय में 13.41 प्रतिशत की वृद्धि हुई और अन्य आय में 17.95 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उच्चतर स्टाफ लागत और अन्य उपरि व्ययों के कारण परिचालन व्ययों में 29.84 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई।

लाभांश

बैंक ने लाभांश पिछले वर्ष के रु.29 प्रति शेयर (290 प्रतिशत) से बढ़ाकर रु.30 प्रति शेयर (300 प्रतिशत) कर दिया (इसमें रु.10 प्रति शेयर का पहले से दिया जा चुका अंतरिम लाभांश (100 प्रतिशत) शामिल है)।

निवल ब्याज आय

बैंक की निवल ब्याज आय में 13.41 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह वर्ष 2008-09 के रु. 20,873.14 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2009-10 में रु. 23,671.44 करोड़ हो गई। ऐसा अग्रिमों एवं निवेशों पर ब्याज-आय में वृद्धि के परिणामस्वरूप हुआ।

वर्ष के दौरान वैश्विक परिचालनों से वर्ष के दौरान सकल ब्याज आय रु. 63,788.43 करोड़ से बढ़कर रु. 70,993.92 करोड़ हो गई। ऐसा मुख्यतया अग्रिमों से उच्च स्तर ब्याज आय होने के कारण हुआ।

भारत में अग्रिमों पर ब्याज आय वर्ष 2009-10 के दौरान बढ़कर रु. 47,633.47 करोड़ हो गई, जबकि वर्ष 2008-09 में यह रु. 42,989.36 करोड़ थी। यह वृद्धि भारत में अग्रिमों पर औसत आय के वर्ष 2008-09 में 10.15% प्रतिशत से गिरकर वर्ष 2009-10 में 9.96% रह जाने के बावजूद हुई। विदेश स्थित कार्यालयों के अग्रिमों से होने वाली ब्याज आय में 12.19 प्रतिशत की कमी आई।

भारत में राजकोषीय परिचालन में नियोजित संसाधनों की आय में 17.85 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण लगाए गए औसत संसाधनों की मात्रा अधिक होना था। फिर भी औसत आय, जो वर्ष 2008-09 में 7.10% रही थी, वर्ष 2009-10 में घटकर 6.52% रह गई।

वैश्विक परिचालनों का कुल ब्याज व्यय वर्ष 2008-09 में रु. 42,915.29 करोड़ था, जो वर्ष 2009-10 में बढ़कर रु. 47,322.48 करोड़ हो गया। भारत में जमाराशियों पर ब्याज-व्यय में पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2009-10 के दौरान 15.04 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि भारत में जमाराशियों के औसत स्तर में 25.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और जमाराशियों की औसत लागत वर्ष 2008-09 के स्तर 6.30 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2009-10 में 5.80 प्रतिशत रह गई थी।

गैर-ब्याज आय

वर्ष 2009-10 में गैर-ब्याज आय की राशि रु. 14,968.15 करोड़ रही, जबकि वर्ष 2008-09 में यह रु. 12,690.79 करोड़ थी।

वर्ष के दौरान बैंक ने भारत और विदेश में स्थित अपने सहयोगी बैंकों/अनुषंगियों और संयुक्त उद्यमों से लाभांश के रूप में रु. 573.48 करोड़ (पिछले वर्ष रु. 409.60 करोड़) प्राप्त किए।

control inflation. On 19 March 2010, to curb inflationary expectations, RBI hiked Repo and Reverse Repo rates by 25 bps each to 5% and 3.50% respectively.

Conditions in the global economy improved in the third and fourth quarters of 2009, which prompted the IMF to reduce the projected rate of economic contraction in 2009 from 1.1% to 0.8%. IMF has also revised the projection of global growth for 2010 to 4.2%, up from 3.9%. In 2009-10, while advanced economies were focused on stabilising their economies in the aftermath of the global financial turmoil, emerging market economies (EMEs) including India, were engaged in mitigating the adverse impact of the global financial crisis on their economies. In India, with the economy firmly on the recovery path towards the second half of the year, the policy emphasis shifted from managing the crisis to managing the recovery.

During 2010-11, the efforts in advanced economies will be to further improve the financial conditions and strengthen the growth impulses, while the endeavour in EMEs including India will be to strengthen the recovery process without compromising on price stability.

Financial Performance

Profit

The Operating Profit of the Bank for 2009-10 stood at Rs.18,320.91 crores as compared to Rs.17,915.23 crores in 2008-09 registering a growth of 2.26%. The Bank has posted a Net Profit of Rs.9,166.05 crores for 2009-10 as compared to Rs.9,121.23 crores in 2008-09 registering a moderate growth of 0.49%.

While Net Interest Income recorded a growth of 13.41% and Other Income increased by 17.95%, Operating Expenses increased by 29.84% attributable to higher staff cost and other expenses.

Dividend

The Bank has increased dividend to Rs.30.00 per share (300%) {(inclusive of interim dividend of Rs.10.00 per share (100%) already paid)} from Rs.29.00 per share (290%) in the last year.

Net Interest Income

The Net Interest Income of the Bank registered a growth of 13.41% from Rs.20,873.14 crores in 2008-09 to Rs.23,671.44 crores in 2009-10. This was due to growth in interest income on advances and investments.

The gross interest income from global operations rose from Rs.63,788.43 crores to Rs.70,993.92 crores during the year. This was mainly due to higher interest income on advances.

Interest income on advances in India registered an increase from Rs.42,989.36 crores in 2008-09 to Rs.47,633.47 crores in 2009-10 despite decline in the average yield on advances in India from 10.15% in 2008-09 to 9.66% in 2009-10. Interest income on advances at foreign offices has decreased by 12.19%.

Income from resources deployed in Treasury operations in India increased by 17.85% mainly due to higher average resources deployed. However, the average yield, which was 7.10% in 2008-09, has decreased to 6.52% in 2009-10.

Total interest expenses of global operations increased from Rs.42,915.29 crores in 2008-09 to Rs.47,322.48 crores in 2009-10. Interest expenses on deposits in India during 2009-10 recorded an increase of 15.04% compared to the previous year, whereas the average level of deposits in India grew by 25.05% and the average cost of deposits declined from 6.30% in 2008-09 to 5.80% in 2009-10.

Non-Interest Income

Non-interest income stood at Rs.14,968.15 crores in 2009-10 as against Rs.12,690.79 crores in 2008-09.

During the year, the Bank received an income of Rs.573.48 crores (Rs.409.60 crores in the previous year) by way of dividends from Associate Banks/subsidiaries and joint ventures in India and abroad.